* अद्वैत मत में ब्रह्म की सत्ता है - पारमार्थिक

14-10-18

# वेदान्तसार

मङ्गलाचरण => अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम्
आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ॥

सदानन्द का गुरु - अद्वयानन्द

अनुबन्ध चतुष्टय => ① अधिकारी ② विषय ③ सम्बन्ध ④ प्रयोजन ।

अधिकारी - ① जिसने वेद वेदाङ्गों का अध्ययन किया हो
② जिसने काम्यनिषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित तथा उपासना के अनुष्ठान से समस्त पापों को दूर करके अन्तःकरण को निर्मल कर दिया है।
③ जो साधन चतुष्टय से सम्पन्न हो।

(6) कर्म

① काम्यानि => स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।
② निषिद्धानि => नरकादीष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।
③ नित्यानि => सन्ध्यावन्दनादीनि
④ नैमित्तिकानि => पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।
⑤ प्रायश्चित्तानि => चान्द्रायणादीनि।
⑥ उपासनानि => शाण्डिल्यविद्यादीनि।

उपासनाओं का परम प्रयोजन = चित्त की एकाग्रता।

कर्मणा पितृलोकः, विद्यया देवलोकः।

## साधनचतुष्टय

① नित्यानित्यवस्तुविवेक - ब्रह्म को ही नित्य वस्तु मानना
② इहामुत्रार्थफलभोगविराग - इस लोक में तथा परलोक में प्राप्त सुखों को अनित्य मानना
③ शमादमादिषट्कसम्पत्ति - शमादि षट्कसम्पत्ति का निरूपण।
④ मुमुक्षुत्व - मोक्ष की इच्छा होना।

शमादि षट्कसम्पत्ति =>

① शम ② दम ③ उपरति ④ तितिक्षा ⑤ समाधान ⑥ श्रद्धा

अज्ञान के वाचक => माया, प्रकृति, अविद्या, अजा।

① शम – श्रवण, मनन और निदिध्यासन को छोड़कर मन को अन्य विषयों मोड़ना शम है। [श्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः]

② दम – श्रवणादि बाहरी इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाना दम है। [बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्]

③ उपरति – विषयों को हटा लिये गये इन बाह्य इन्द्रियों का उन श्रवणादि बाह्य इन्द्रियों के अतिरिक्त विषयों से उपरत होना (अर्थात विषय विषयों की ओर उन्मुख हो जाने के उत्सुक से रहित होना। [निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः]

④ तितिक्षा – [शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।]

⑤ श्रद्धा – "गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।"

विषय => [जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्।]

सम्बन्ध => [उपनिषत्प्रमाणस्य बोध्यबोधकभावलक्षणः।]

प्रयोजन => [तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।] "तरति शोकमात्मवित्" "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति"।

अध्यारोप => [असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।]

वस्तु => "ब्रह्म" सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म।

अवस्तु => [अज्ञानादिसकलजडसमूहः]।

अज्ञान => सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं, त्रिगुणात्मकं, ज्ञानविरोधि, भावरूपं यत्किञ्चित्, [देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम्।]

अज्ञान => [अजामेकाम्।]

समष्टि => यह समष्टि तथा व्यष्टि के अभिप्राय से एक तथा अनेक कहा जाता है। अज्ञान की यह समष्टि व्यष्टि की उपाधि की अपेक्षा उत्कृष्ट उपाधि होने के कारण अथवा जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट (ईश्वर) की उपाधि होने के कारण विशुद्ध सत्त्वगुण की प्रधानता से युक्त होती है।

[इयं समष्टिरुत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना।]

सम्पूर्ण विश्व का कारण होने से यह कारण शरीर तथा [आनन्दमय कोश] कहलाती है।

व्यष्टि => इयं व्यष्टिर्निकृष्टोपाधितया मलिनसत्त्वप्रधाना।

यह अहङ्कारादि का कारण होने से – कारण शरीर

आनन्द की अधिकता से – आनन्दमयकोश।

समष्टि = माया
व्यष्टि = अविद्या
अज्ञान के वाचक – माया, प्रकृति, अविद्या
अजा

⇒ जीव ⇒ सुषुप्तिकाल = प्राज्ञ
स्वप्नकाल = तैजस
जागरण = विश्व

* ईश्वर और प्राज्ञ का अभेद ⇒ सर्वेश्वर

* अज्ञान की समष्टि व्यष्टि से उपहित चैतन्य = ईश्वर प्राज्ञ

* ईश्वर और प्राज्ञ का आधारभूत जो अनुपहित है = तुरीय

* वेदान्ती लोग इसे शिव, अद्वैत या तुरीय (चतुर्थ) भी कहते हैं।

* अज्ञान की शक्ति ⇒ 2

① आवरण – रज्जु में सर्प की सम्भावना।
② विक्षेप – रज्जु में सर्प को मानना।

① आवरण ⇒ "आत्मा के वास्तविक सत्-चित् एवं आनन्दस्वरूप को ढक लेने के कारण अज्ञान की यह शक्ति आवरण कहलाती है।"

② विक्षेप ⇒ "ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त समग्र जगत को सृष्टि करने के कारण अज्ञान की शक्ति विक्षेप शक्ति कहलाती है।"
[विक्षेपशक्तिर्लिङ्गादिब्रह्माण्डान्तं जगत्सृजेत् इति।]

* ईश्वर जगत् का निमित्त तथा उपादान कारण →

⇒ निमित्त ⇒ स्वप्रधानतया निमित्तं।
उपादान ⇒ स्वपाधिप्रधानतयः उपादानं। यथा – मकड़ी।

* ईश्वर से जगत् की उत्पत्ति ⇒ [तमोगुण की प्रधानता से युक्त तथा विक्षेप शक्ति वाले अज्ञान से उपहित चैतन्य – ईश्वर।]

[तमः प्रधानविक्षेपशक्तिमदज्ञानोपहितचैतन्यादाकाश।"]

आकाश → वायु → अग्नि → जल → पृथ्वी

* इन आकाशादि के जड़ता की अधिकता होने से उनके कारण में तम की प्रधानता मानी जाती है।

* ये आकाशादि ही ~~स्थूल~~ सूक्ष्म भूत, तन्मात्राएं और अपञ्चीकृत (महाभूत) कहे जाते हैं।

* इनमें सूक्ष्म शरीर तथा स्थूलभूत (पञ्चीकृत आकाशादि महाभूत) उत्पन्न होते हैं।

[बुद्धौ चित्तस्य ~~कालके~~ अहंकारस्य मनसि च अन्तर्भावः।]

* सूक्ष्मशरीर => लिङ्ग शरीर सत्रह अवयवों से युक्त।

सूक्ष्म शरीर [ * पाँच ज्ञानेन्द्रियां + पांच कर्मेन्द्रियां + पाँच वायु + बुद्धि और मन = 17 सूक्ष्मशरीर।
(ज्ञानेन्द्रियां: आकाशादि सात्विक अंश से उत्पन्न; कर्मेन्द्रियां: आकाशादि रजोगुण के अंश से उत्पन्न)

* बुद्धि + ज्ञानेन्द्रिय => विज्ञानमयकोश।
* मन + ज्ञानेन्द्रिय => मनोमयकोश।
* पञ्च प्राण + पञ्च कर्मेन्द्रियां => प्राणमय कोश।

* पञ्चवायु => प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान।

* कुछ सांख्यमतानुयायी के अनुसार – नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय नामक और पांच वायु हैं।

* ये प्राणादि वायु आकाशादि सूक्ष्म भूतों के सम्मिलित रजोगुण के अंश से उत्पन्न होते हैं।

* प्राणादि पञ्चवायु + कर्मेन्द्रिय = प्राणमयकोश।

* ✓ इन तीनों कोशों से मिलकर सूक्ष्म शरीर की उत्पत्ति होती है।

* सूक्ष्म शरीर की व्यष्टि से (अर्थात एक सूक्ष्म शरीर से) उपहित चैतन्य => तैजस।

Checked 7-12-18

* त्रिवृत्तकरण => अग्नि, जल पृथ्वी।

* मिथ्याप्रतीतिरूप अन्यथाभाव के दो प्रकार -

(1) परिणामवाद
(2) विवर्तवाद

(1) परिणामवाद – ["सतत्वतोऽन्यथा प्रथा विकार इत्युदीरितः"]

* जब कोई वस्तु अपना स्वरूप त्यागकर किसी अन्यरूप को धारण कर लेती है तो उसे परिणामवाद या विकारवाद कहते हैं। उदा० – "दूध का दधि में परिणत होना"।

(2) वि

② विवर्तवाद – ["अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्त इत्युदीरितः।"]

* जब किसी पदार्थ में अयथार्थ – मिथ्या प्रतीति के कारण दूसरी मालूम पड़ती है तो वह विवर्त कहलाती है।

उदा० – "रस्सी अपने स्वरूप को ~~त्यागकर~~ त्यागे बिना ही सर्प के रूप में भासित होती है यही विवर्त है।"

* **महावाक्यार्थ निरूपणम्** =>

उपदेशवाक्य => "तत्त्वमसि" छान्दोग्योपनिषद्, सामवेद, उपदेश। वाक्य।

इदं तत्त्वमसीति वाक्यम् सम्बन्धत्रयेणाखण्डार्थ बोधकं भवति

① पदयोः सामानाधिकरण्यम्।
② पदार्थयोर्विशेषणविशेष्य भावः।
③ प्रत्यगात्मलक्षणयोर्लक्ष्यलक्षणभावश्चेति।

* **लक्षणा** =>

① जहल्लक्षणा – "गंगायां घोषः" [प्रयोजनवती लक्षणा]
② अजहल्लक्षणा – "शोणो धावति"
③ जहदजहल्लक्षणा (भागलक्षणा – "तत्त्वमसि"
(लक्ष्यलक्षणभाव सम्बन्ध)

* **अनुभववाक्य** =>

"अहं ब्रह्मास्मि" – बृहदारण्यकोपनिषद् (शु॰ यजु॰)

* किसी विषय के ज्ञान के क्रम में दो अवस्थाएं

① वृत्तिव्याप्ति
② फलव्याप्ति

" ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्तिव्याप्तिरपेक्षिता
बुद्धितत्स्थ चिदाभासौ द्वावेतौ व्याप्नुतो घटम्।
तत्राज्ञानं धिया नश्येदाभासेन घटः स्फुरेत्॥"

चैतन्य के साक्षात्कार के उपाय –

श्रवण (6) मनन- निदिध्यासन समाधि

श्रवण:
① उपक्रम, उपसंहार
② अभ्यास
③ अपूर्वता
④ फल
⑤ अर्थवाद
⑥ उत्पत्ति

निदिध्यासन – एकमात्र ब्रह्म में विश्वास

समाधि:
- सविकल्प – ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय में भेद की प्रतीति होते हुए भी ब्रह्म की प्रीति
- निर्विकल्प – ज्ञाता ज्ञान और ज्ञेय के भेद की प्रतीति का पूर्ण अभाव
  - (8) अंग – यम, नियमादि –
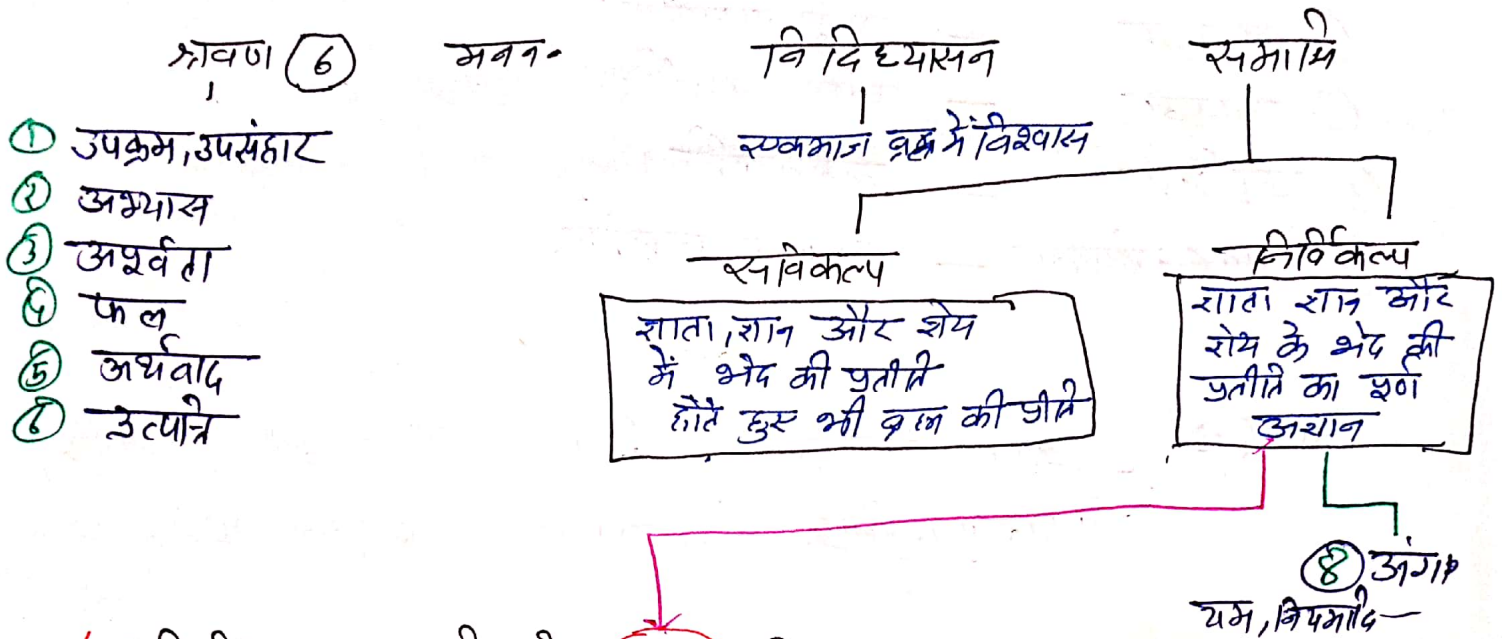
* निर्विकल्प समाधि के चार विघ्न –

① लय (निद्रा) ② कषाय (रागादिवासना) ③ रसास्वाद (सविकल्पक आनन्द) ④ विक्षेप (अन्य वस्तु का आश्रय लेना)

* कर्म के भेद – ① क्रियमाण ② सञ्चित ③ प्रारब्ध

* भेद के तीन प्रकार – ① स्वगत ② सजातीय ③ विजातीय

धारणा ⇒ अद्वितीयवस्तुन्यन्तरिन्द्रियधारणं धारणा।

स्थूलसृष्टि: ⇒

पञ्चीकृत भूतों से भू: आदि सात ऊर्ध्वलोक पातालादि सात अधोलोक, इस प्रकार कुल चौदह भुवन निर्मित हुए –

| ऊर्ध्वलोक | अधोलोक |
|---|---|
| 1 - भू: | 1 - अतल |
| 2 - भुव: | 2 - वितल |
| 3 - स्व: | 3 - सुतल |
| 4 - महः | 4 - ~~तलातल~~ रसातल |
| 5 - जन: | 5 - तलातल |
| 6 - तप: | 6 - महातल |
| 7 - सत्यम् | 7 - पाताल |

समाधि = दो प्रकार

चतुर्विधशरीराणि =>

1. जरायुज — मनुष्यपश्वादीनि ।
2. अण्डज — पक्षिपन्नगादीनि ।
3. उद्भिज — लतावृक्षादीनि ।
4. ~~स्वेदज~~ स्वेदज — यूकामशकादीनि ।

अपवाद => ["अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तुविवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्"।]

* उद्गिरणकरः वायु विशेषः — नागवायु
* उन्मीलनकर वायुः — कूर्मः
* क्षुत्कर वायुः — कृकलः
* जृम्भणकर वायुः — देवदत्तः
* पोषणकर वायुः — धनञ्जयः

# वेदान्त मोक्षशास्त्र 11-1-19

* प्रस्थानत्रयी =>

उपनिषद - श्रुतिप्रस्थान
ब्रह्मसूत्र - न्यायप्रस्थान उपनिषद वाक्यों की तार्किक रूप से व्याख्या
गीता - स्मृतिप्रस्थान

* श्रुति स्मृति विरोधस्तु स्मृतिरेव गरीयसी।
* उपनिषद को जो गाया गया = गीता (स्त्रीलिंग)
* गीता उपनिषद का विशेषण है इसलिये यह स्त्रीलिङ्ग है।
* मोक्ष = सीमितता का त्याग
* वेदान्त में 11 भाष्य उपलब्ध हैं।
* 11 सम्प्रदाय तथा 11 शास्त्र भी हैं।

| | सम्प्रदाय | आचार्य | भाष्य |
|---|---|---|---|
| 1 | अद्वैत | शङ्कर | शारीरकभाष्य |
| 2 | द्वैत | मध्व | पूर्णप्रज्ञभाष्य |
| 3 | द्वैताद्वैत | निम्बार्क | वेदान्तपारिजात |
| 4 | शैवविशिष्टाद्वैत | श्रीकण्ठ | शैवभाष्य |
| 5 | भेदाभेद | ~~श्रीपति~~ भास्कर | भास्करभाष्य |
| 6 | विशिष्टाद्वैत | रामानुज | श्रीभाष्य |
| 7 | शुद्धाद्वैत | वल्लभाचार्य | अणुभाष्य |
| 8 | स्वरूपाद्वैत | श्रीपञ्चाननतर्करत्नभट्टाचार्य | शक्तिभाष्य |
| 9 | अविभागाद्वैत | विज्ञानभिक्षु | विज्ञानामृतभाष्य |
| 10 | अचिन्त्यभेदाभेद | बलदेवविद्याभूषण | गोविन्दभाष्य |
| 11 | वीरशैवविशिष्टाद्वैत | श्रीपति | श्रीकरभाष्य |

(1) गोवर्धन मठ – जगन्नाथ पुरी, (पुरुषोत्तम क्षेत्र) ऋग्वेद
प्रज्ञानं ब्रह्म – ऐतरेय।
शिष्य – पद्मपाद

(2) श्रृंगेरी पीठ – कर्नाटक, (रामेश्वरम क्षेत्र) यजुर्वेद
अहं ब्रह्मास्मि
शिष्य – सुरेश्वराचार्य

(3) शारदा पीठ – द्वारका, सामवेद तत्त्वमसि।
शिष्य – हस्तामलक (हस्तामलकस्तोत्र

(4) ज्योतिष पीठ – बद्रीनाथ अथर्ववेद अयमात्मा ब्रह्म। तोटकस्तोत्र
शिष्य – तोटकाचार्य (श्रुतिधर)· श्रुतिसारसमुद्धरण

* परम्परा => (1) सन्यास – सनक, सनन्दन, सनत्कुमार
(2) गृहस्थ – प्रजापति से शुरु

* सन्यास की परम्परा को दशनामी में शंकराचार्य को निर्धारित किया गया।

* श्रवण, मनन, निदिध्यासन इनका भामती और विवरण में मतभेद है।

* शाङ्करभाष्य – भामती टीका – वाचस्पति मिश्र

पञ्चपादिका – पद्मपाद
विवरण – प्रकाशात्मयोगी

* आत्मन: कामाय सर्वं प्रियं भवति – बृहदा० –

विवरण – सन्यासी
भामती – गृहस्थी

* सुरेश्वराचार्य (मण्डनमिश्र) के शिष्य – सर्वज्ञात्ममुनि (बृहद् वेदान्ती)

* मीमांसा – वेद के वाक्यों का विश्लेषण।
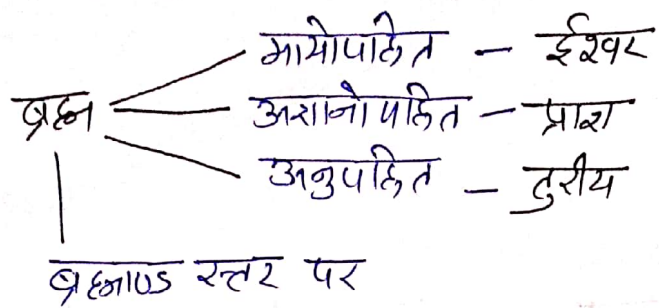
* अज्ञान की आवरण शक्ति एकत्व का बोध होने नहीं देती है
* वेदान्त में "ब्रह्म" को ही अज्ञान का "निमित्त" और "उपादान" कारण माना है।
* उपादान – शक्ति की दृष्टि से। (उपाधि) स्वोपाधि प्रधानतया
* निमित्त – चैतन्य की दृष्टि से। (अपनी) स्वप्रधानतया
* इस दृष्टि से ब्रह्म "अद्वैत" है उसे किसी "परमाणु" इत्यादि की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
* वेद (4) पुरुषार्थों के लिये है। प्रथम (3) पुरुषार्थ "कर्म" पर आधारित हैं, चतुर्थ "ज्ञान" पर आधारित है।
* वेदान्त में तन्मात्रा से – अहंकारोत्पत्ति।
* सांख्य में अहंकार से – तन्मात्रोत्पत्ति।
* "उपनिषद नाम आत्मविद्या"।
* लिङ्ग => "लिङ्गनात् ज्ञापनात् ज्ञापयति इति लिङ्गम्"।
* सूक्ष्म शरीर = (19) तत्व (माण्डूक्य में, वेदान्त में) = (17) (बुद्धि का चित्त में तथा अहङ्कार का मन में अन्तर्भाव हो जाता है

Date
16-2-19

* शक्ति से युक्त चैतन्य से सृष्टि होती है, जिसका नाम ईश्वर है।

* आकाश में वायु उत्पन्न होती है आकाश से नहीं।
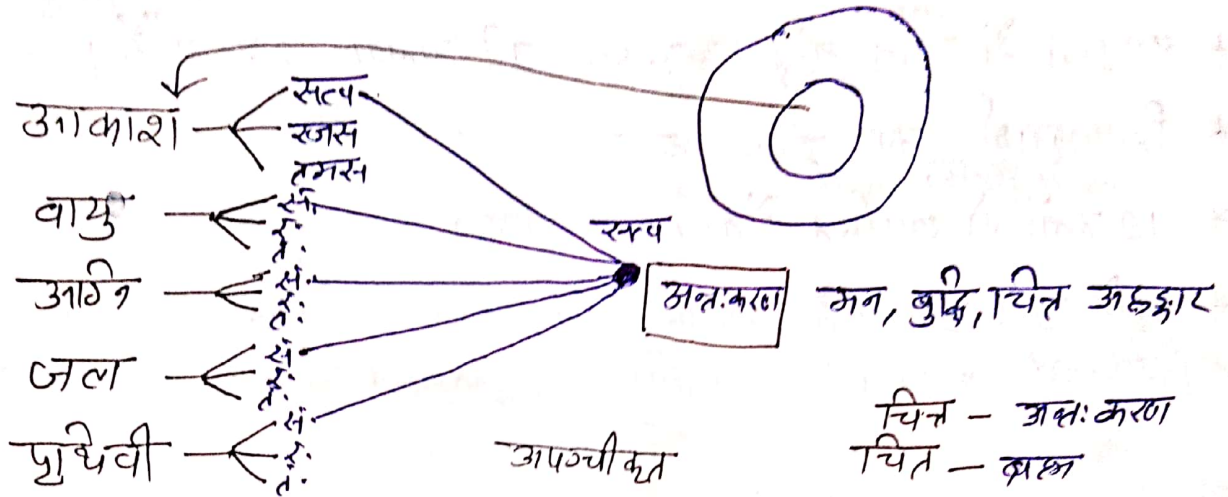
* पाँचों के सत्व को मिलाने से — अन्तः करण ✓
* पांचों के अलग अलग सत्व से — पञ्च ज्ञानेन्द्रियां ✓
* स्मरणात्मिका अन्तःकरण वृत्ति — चित्त
* अनुसन्धानात्मक अन्तःकरण वृत्ति — चित्त

1. बुद्धि + पञ्च ज्ञानेन्द्रिय = विज्ञानमय कोश = ज्ञानशक्ति (कर्त्ता
2. मन + पञ्च ज्ञानेन्द्रिय = मनोमय कोश = इच्छाशक्ति (करण,
3. प्राण + पञ्च कर्मेन्द्रिय = प्राणमय कोश = क्रियाशक्ति (कार्य)

* इन तीनों से मिलकर सूक्ष्म शरीर बनता है।

* सत्व + रजस = सूक्ष्म शरीर।

* सभी तन्मात्राओं (पञ्चमहाभूतों) का रजस मिलकर = प्राण (यह रजोगुण का परिणाम है)

* सभी तन्मात्राओं (पञ्चमहाभूतों) के स्वतन्त्र रज से — पञ्च कर्मेन्द्रियां ✓

वाक्, पाणि, पाद पायु, उपस्थ — क्रम से

* 5 ज्ञानेन्द्रियां + 5 कर्मे., + 5 प्राण + चित्त + अहङ्कार =

* विज्ञानमय कोश से उपहित चैतन्य = जीव
* अज्ञान से उपहित चैतन्य = ईश्वर [जाग्रतवासनामयत्वात्]
* सूक्ष्म शरीरों से (समष्टि) उपहित चैतन्य = हिरण्यगर्भ (स्थूलप्रपञ्च का लयस्थान)
* साङ्ख्य में मन बुद्धि अहङ्कार की अलग-2 सत्ता है।
* हिरण्यगर्भ का दूसरा नाम = सूत्रात्मा, प्राण
* (सूक्ष्मशरीर की व्यष्टि से) 17 तत्वों से उपहित चैतन्य = तैजस
* कृति और प्रयत्न को मीमांसा में भावना कहते हैं।
* विज्ञानमय, मनोमय, प्राणमय कोशों से उपहित चैतन्य – हिरण्यगर्भ

① विज्ञानमय
② मनोमय
③ प्राणमय

तैजस

हिरण्यगर्भ (प्राण सूत्रात्मा)

## पञ्चीकरणम्

$\frac{1}{2} \frac{1}{2} = 1$

(आधा)
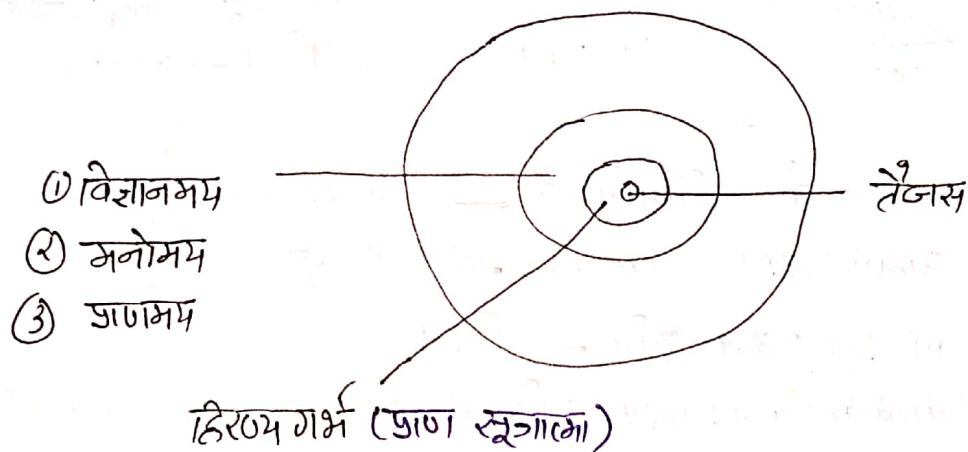
आकाश – तमस – $\frac{1}{2}$ (50%) + $\frac{1}{8}$ (12.5%) + $\frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8}$

वायु – तमस – $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8}$

अग्नि – तमस – $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8}$

जल – तमस – $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8}$

पृथिवी – तमस – $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8}$

स्थूलप्रपञ्च का लयस्थान – हिरण्यगर्भ, तैजस की समष्टि, व्यष्टि में।

आधा

आकाश − $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} = (1)$

वायु − $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} = (1)$

अग्नि − $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} = (1)$

जल − $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} = (1)$

पृथ्वी − $\frac{1}{2} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} + \frac{1}{8} = (1)$

* पांचो से मिला हुआ − पञ्चीकृत

* छान्दोग्योपनिषद में इसे त्रिवृत्तकरण कहा गया है −

  पृथ्वि, जल, अग्नि।

* त्रिवृत्तकरण को पञ्चीकरण के रूप में लाया − शंकराचार्य ने।
* व्यष्ट्यात्मक स्थूल जगत से उपहित चैतन्य − विश्व (अन्नमय कोश (विश्व))
* समष्ट्यात्मक स्थूल जगत से उपहित चैतन्य − (वैश्वानर) (कॉसमांस अन्नमय कोश। सर्वनराभिमानित्वात्)
* अद्यते अनेन इति अन्नम्। अत्ति इति अन्नम्।)
* जिसके कारण भोजन किया जाए।

- कारण शरीर − सुषुप्ति
- सूक्ष्म − स्वप्न
- स्थूल − जाग्रत ✓

उपनिषदों में पांच महावाक्य —

1. उत्पत्तिवाक्य
2. स्थितिवाक्य
3. लयवाक्य
4. प्रवेशवाक्य
5. नियमन वाक्य

इन्हीं पांचों वाक्यों पर ही भारतीय सिद्धान्त टिका हुआ है।

14-10-18

* अद्वैतमत में ब्रह्म की सत्ता है – पारमार्थिक

# वेदान्तसार

मङ्गलाचरण => अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम्
आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ॥

सदानन्द का गुरु – अद्वयानन्द

अनुबन्ध चतुष्टय => ① अधिकारी ② विषय ③ सम्बन्ध ④ प्रयोजन ।

(i) अधिकारी – ① जिसने वेद वेदाङ्गों का अध्ययन किया हो
② जिसने काम्यनिषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित तथा उपासना के अनुष्ठान से समस्त पापों को दूर करके अन्तःकरण को निर्मल कर दिया हो।
③ जो साधन चतुष्टय से सम्पन्न हो।

(6) कर्म
① काम्यानि => स्वर्गादीष्टसाधनानि, ज्योतिष्टोमादीनि।
② निषिद्धानि => नरकादीष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।
③ नित्यानि => प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि
④ नैमित्तिकानि => पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।
⑤ प्रायश्चित्तानि => चान्द्रायणादीनि पापक्षयसाधनानि।
⑥ उपासनानि => शाण्डिल्यविद्यादीनि। सगुणब्रह्मविषय मानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि

परमप्रयोजन
↓
बुद्धिशुद्धि

उपासनाओं का परम प्रयोजन = चित्त की एकाग्रता।

[कर्मणा पितृलोकः, विद्यया देवलोकः]

* नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित एवं उपासन कर्मों का अवान्तरफल = पितृलोक एवं सत्यलोक प्राप्ति।

## साधनचतुष्टय

① नित्यानित्यवस्तुविवेक – ब्रह्म को ही नित्य वस्तु मानना
② इहामुत्रार्थफलभोगविराग – इस लोक में तथा परलोक में प्राप्त सुखों को अनित्य मानना
③ शमादिषट्कसम्पत्ति – शमादि षट्कसम्पत्ति की निवृत्ति।
④ मुमुक्षुत्व – मोक्ष की इच्छा होना।

(शमादि षट्कसम्पत्ति =>)

① शम ② दम ③ उपरति ④ तितिक्षा ⑤ समाधान ⑥ श्रद्धा

अज्ञान के वाचक => माया, प्रकृति, अविद्या, अजा।

① शम — श्रवण, मनन और निदिध्यासन को छोड़कर मन को अन्य विषयों से रोकना शम है। [श्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः]

② दम — श्रवणादि बाहरी इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाना दम है। [बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्]

③ उपरति — विषयों को हटा लिये गये इन बाह्य इन्द्रियों का उन श्रवणादि बाह्य इन्द्रियों के अतिरिक्त विषयों से उपरत होना (अर्थात् विषय [विषयों की ओर उन्मुख हो जाने के उत्साह से रहित होना।
[निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः] • विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।

④ तितिक्षा — [शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।]

⑤ समाधान — [निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्।]

⑥ श्रद्धा — [गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।"

(ii) विषय => [जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्।]

(iii) सम्बन्ध => [उपनिषत्प्रमाणस्य बोध्यबोधकभावलक्षणः।]

(iv) प्रयोजन => [तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।]
"तरति शोकमात्मवित्" "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति"।

अध्यारोप => [असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।]

वस्तु => "ब्रह्म" सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म। सत्, चित्, आनन्द, अनन्त अद्वय।

अवस्तु => [अज्ञानादिसकलजडसमूहः।]

अज्ञान => सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चित्, इति वदन्ति अहमज्ञ इत्याद्यनुभवात् [देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम्।]

अज्ञान => [अजामेकाम्।]

(सकलज्ञानावभासकत्वात्)

समष्टि => यह समष्टि तथा व्यष्टि के अभिप्राय से एक तथा अनेक कहा जाता है।

अज्ञान की यह समष्टि व्यष्टि की उपाधि की अपेक्षा उत्कृष्ट उपाधि होने के कारण अथवा जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट (ईश्वर) की उपाधि होने के कारण विशुद्ध सत्वगुण की प्रधानता से युक्त होती है।

[इयं समष्टिरुत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्वप्रधाना।] सर्वज्ञत्व, सर्वेश्वरत्व सर्वनियन्तृत्व, अज्ञान की अवभासक

सम्पूर्ण विश्व का कारण होने से यह कारण शरीर तथा [आनन्दमय कोश] कहलाती है। → समस्त स्थूल एवं सूक्ष्म के विलय का आधार — ईश्वर, प्राज्ञ

व्यष्टि => इयं व्यष्टिर्निकृष्टोपाधितया मलिनसत्वप्रधाना।

अल्पज्ञत्व यह अहङ्कारादि का कारण होने से — कारण शरीर [सकलज्ञानावभासकत्वात्]
अनीश्वरत्व

आनन्द की अधिकता से — आनन्दमयकोश।

ईश्वर, प्राज्ञ स्थूल एवं सूक्ष्म प्रपञ्च के विलय का आधार होने के कारण — सुषुप्ति कहते हैं।

श्रद्धा

## चैतन्य के साक्षात्कार के उपाय –

(1) श्रवण (लिङ्ग) (6)  (2) मनन  (3) निदिध्यासन  (4) समाधि

निदिध्यासन – एकमात्र ब्रह्म में विश्वास

1. उपक्रम, उपसंहार
2. अभ्यास
3. अपूर्वता
4. फल
5. अर्थवाद
6. उपपत्ति

समाधि –
- सविकल्प – ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय में भेद की प्रतीति होते हुए भी ब्रह्म की प्रतीति
- निर्विकल्प – ज्ञाता ज्ञान और ज्ञेय के भेद की प्रतीति का पूर्ण अभाव

(8) अंग [यम, नियमादि –

★ निर्विकल्प समाधि के चार विघ्न –

1. लय (निद्रा) [चित्तवृत्तेर्निद्रा]
2. कषाय (रागादिवासना) [रागादिवासनया स्तब्धीभावात्]
3. रसास्वाद [सविकल्पक आनन्द] [सविकल्पकानन्दास्वादनं]
4. विक्षेप (अन्यावलम्बनम्) [अन्य वस्तु का आश्रय लेना]

★ कर्म के भेद – (1) क्रियमाण (2) सञ्चित (3) प्रारब्ध ✓

★ भेद के तीन प्रकार – (1) स्वगत (2) सजातीय (3) विजातीय ✓

धारणा ⇒ अद्वितीयवस्तुन्यन्तरिन्द्रियधारणं धारणा।
अन्तःकरण को अद्वैत वस्तु में लगा देना।

स्थूलसृष्टिः ⇒

पञ्चीकृत भूतों से भूः आदि सात ऊर्ध्वलोक पातालादि सात अधोलोक, इस प्रकार कुल चौदह भुवन निर्मित हुए –

| ऊर्ध्वलोक | अधोलोक |
| --- | --- |
| 1 – भूः | 1 – अतल |
| 2 – भुवः | 2 – वितल |
| 3 – स्वः | 3 – सुतल |
| 4 – महः | 4 – ~~तलातल~~ रसातल |
| 5 – जनः | 5 – तलातल |
| 6 – तपः | 6 – महातल |
| 7 – सत्यम् | 7 – पाताल |

समाधि = दो प्रकार

ध्यान ⇒ तत्राद्वितीयवस्तुनि विच्छिद्य विच्छिद्यान्तरिन्द्रियवृत्तिप्रवाहो ध्यानम्।

चतुर्विधशरीराणि =>

1. जरायुजा — मनुष्यपश्वादीनि।
2. अण्डजा — पक्षिपन्नगादीनि।
3. उद्भिजा — लतावृक्षादीनि।
4. ~~स्वेदज~~ स्वेदजा — यूकामशकादीनि।

अपवाद => ["अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तुविवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्"]

सांख्यानुसार

* उद्गिरणकरः वायुविशेषः — नागवायुः
* उन्मीलनकर वायुः — कूर्मः
* क्षुत्कर वायुः — कृकलः
* जृम्भणकर वायुः — देवदत्तः
* पोषणकर वायुः — धनञ्जयः

**श्रवण** – श्रवणं नाम षड्विधलिङ्गैरशेषवेदान्तानामद्वितीये वस्तुनि तात्पर्यावधारणम्।

उपक्रम/उपसंहार – (प्रकरण) प्रतिपाद्यस्यार्थस्य तदाद्यन्तयोरुपपादनमुपक्रमोपसंहारौ। (छा.) तत्वमसि (9) बार – (आदि) उपक्रम – एकमेवाद्वितीयम् (अंत) उपसंहार – ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्।

अभ्यास => प्रकरणप्रतिपाद्यस्य वस्तुनस्तन्मध्ये पौनः पुन्येनप्रतिपादनम् अभ्यासः।

अपूर्वता => प्रकरणप्रतिपाद्यस्याद्वितीयवस्तुनः प्रमाणान्तराविषयीकरणम् पूर्वता।

फल => फलं तु प्रकरणप्रतिपाद्यस्यात्मज्ञानस्य तदनुष्ठानस्य वा तत्र तत्र श्रूयमाणं प्रयोजनम्।

अर्थवाद => प्रकरणप्रतिपाद्यस्य तत्र तत्र प्रशंसनमर्थवादः।

उपपत्ति => प्रकरणप्रतिपाद्यार्थसाधने तत्र तत्र श्रूयमाणा युक्ति रुपपत्तिः।

मनन => मननं तु श्रुतस्याद्वितीयवस्तुनो वेदान्तानुगुणयुक्तिभिरनवरतमनुचिन्तनम्।

निदिध्यासन => विजातीयदेहादिप्रत्ययरहिताद्वितीयवस्तुसजातीयप्रत्ययप्रवाहो निदिध्यासनं।

सविकल्पक => तत्र सविकल्पको नाम ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयानपेक्षयाऽद्वितीयवस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरवस्थानम्। दृश्य स्वरूपं गगनोपमं परं —

निर्विकल्पक => निर्विकल्पकस्तु ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयापेक्षयाद्वितीयवस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरतितरामेकीभावेनावस्थानम्।

19/10/2019

ईश्वर => * अज्ञान की समष्टि से उपहित चैतन्य।
* सम्पूर्ण विश्व का कारण होने से — कारण शरीर
* आनन्द की अधिकता होने से — आनन्दमय कोश सकलशावका / अवभासकत्वात्
* यह सर्वज्ञत्व, सर्वेश्वरत्व, सर्वनियन्तृत्व, अव्यक्त, अन्तर्यामी जगत का कारण कहलाता है।
* इयं समष्टिरुत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्वप्रधाना।
* यह स्थूल सूक्ष्म के विलय का आधार होने से — सुषुप्ति

प्राज्ञ => * इयं समष्टिर्निकृष्टोपाधितया मलिनसत्वप्रधाना।
* अज्ञान की व्यष्टि से उपहित चैतन्य।
* अहङ्कारादि का कारण होने से — कारण शरीर
* आनन्द की अधिकता होने से — आनन्दमय कोश
* यह अल्पज्ञत्व, अनीश्वरत्व, एकज्ञानावभासकत्वात् - प्राज्ञ कहलाता है।

ईश्वर, प्राज्ञ => * स्थूल एवं सूक्ष्म प्रपञ्च के विलय का आधार होने से ईश्वर और प्राज्ञ — सुषुप्ति कहलाते हैं।
* प्रलयावस्था में ईश्वर और प्राज्ञ अज्ञान की सूक्ष्म वृत्तियों से आनन्द का अनुभव करते हैं।
* ईश्वर और प्राज्ञ का भेद — सर्वेश्वर
* ईश्वर और प्राज्ञ का आधारभूत जो अनुपहित है — तुरीय

हिरण्यगर्भ (सूत्रात्मा, प्राण) => * सूक्ष्म शरीर की समष्टि से उपहित चैतन्य।
* सर्वत्रानुस्यूतत्वाज्ज्ञानेच्छाक्रियाशक्तिमदुपहितत्वाच्च, जाग्रद्वासनामयत्वात्
* स्थूल प्रपञ्च का लय स्थान।

तैजस => * सूक्ष्म शरीर की व्यष्टि से उपहित चैतन्य।
* तेजोमयान्तःकरणोपहितत्वात्, जाग्रद्वासनामयत्वात्
* स्थूल प्रपञ्च का लयस्थान।

हिरण्यगर्भ, तैजस => * हिरण्यगर्भ और तैजस स्वप्नावस्था में मनोवृत्तियों के द्वारा
* सूक्ष्म विषयों का (वासना रूप से) अनुभव करते हैं।

वैश्वानर => * स्थूल जगत की समष्टि से उपहित चैतन्य।
(विराट) * अन्नविकारत्वात् अन्नमयकोश, सर्वाभिमानत्वाद् जाग्रत।
* स्थूलभोगायतनत्वाच्च स्थूलशरीर

विश्व => * स्थूल जगत की व्यष्टि से उपहित चैतन्य।
* अन्नविकारत्वात् अन्नमयकोश, जाग्रत सर्वाभिमानत्वाद्।
* स्थूलभोगायतनत्वाच्च स्थूलशरीर जाग्रत।

जीव =>

* सुषुप्तिकाल — प्राज्ञ — कारण शरीर
* स्वप्नकाल — तैजस — सूक्ष्म शरीर
* जागरण — विश्व — स्थूल शरीर